Udhyan Bhawan, 2-Sapru Marg, Lucknow-226001
Telephone - 0522-4044414, 2623277
Email - dirhorti@rediffmall.com
http://uphorticulture.gov.in

रजनीगन्धा की व्यावसायिक खेती

परिचय

रजनीगन्धा एक बहुपयोगी पौधा है जिसका पुष्प तथा सुगन्ध उद्योगों में महत्वपूर्ण स्थान है। इस अलंकारिक कन्दीय पौधे के पुष्प सुन्दरता, लालित्य तथा विशिष्ट गन्ध के लिए कर्तित पुष्प (cut flower) के रूप में उपयोगिता के कारण पुष्प उद्योग में प्रचलित तथा प्रसिद्ध हैं। रजनीगंधा के फूल ऐसे समय उपलब्ध होते हैं जब बाजार में अन्य सजावटी पुष्पों का अभाव होता है। इसके कटे फूल उत्तम गुणवत्ता, लम्बे समय तक ताजा बने रहने और परिवहन में सुविधा के कारण पुष्पसज्जा, पुष्पविन्यास तथा उपहार के रूप में पसन्द किए जाते हैं जबकि खुले फूलों को गजरा, वेणी तथा अन्य सजावट के लिए प्रयोग किया जाता है। रजनीगन्धा की कुछ किस्में सुन्दर पत्तियों के लिए गमलों में सजावटी पौधे के रूप में उगाई जाती हैं। सुगंधित तथा सुवासित पुष्पों की सुगन्ध उद्योग में भारी मांग है जिनसे प्राप्त प्राकृतिक सगन्ध तेल का उपयोग उच्च कोटि के सौन्दर्य प्रसाधनों तथा इत्रों में किया जाता है। रजनीगन्धा के कन्दों तथा पुष्पों के औषधीय उपयोग भी हैं।

रजनीगन्धा की व्यावसायिक खेती का सन्दर्भ लगभग 600 वर्ष प्राचीन है जब मेक्सिको में इसकी खेती की जाती थी। वहाँ से यह फूल स्पेन और फ्रांस तथा यूरोप के अन्य देशों में पहुंचा। भारत में इसके लाए जाने के बारे में सन्दर्भ उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में रजनीगन्धा की खेती अमेरिका के दक्षिणी राज्यों, इटली, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका, ताइवान और अन्य उष्ण तथा उपोष्ण देशों में वृहत स्तर पर की जाती है। भारत में इसकी व्यावसायिक कृषि पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में की जाती है। उत्तर प्रदेश में छोटे पैमाने पर रजनीगन्धा की खेती की जाती है। देश तथा प्रदेश में इसकी खेती के अधीन क्षेत्रफल तथा उत्पादन के आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, तथापि अनुमानतः देश के लगभग 20,000 हेक्टेयर क्षेत्र में रजनीगन्धा की खेती की जाती है।

वानस्पतिक विवरण

रजनीगन्धा का वानस्पतिक नाम *पॉलिएन्थस ट्यूबरोसा* लिन. है तथा यह एमेरिलीडेसी कुल का सदस्य है। यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा है, जिसमें कन्दरूपी (बल्ब की तरह) जड़ें होती हैं। इसका कंद से उत्पन्न तना सरस तथा चौड़े आधार वाला और पत्तियों से ढका होता है। कंद से लगी 8-10 गहरे हरे रंग की पत्तियाँ लगभग 1.5 सेमी चौड़ी, घास की तरह और 30-45 सेमी लम्बी होती हैं। नीचे की पत्तियाँ लम्बी, फैली हुई होती हैं जो क्रमशः छोटी होती जाती हैं। लगभग 75-100 सेमी लम्बी और मजबूत पुष्प तने (शूकी, spike) के ऊपरी भाग में दलपुंज युक्त फूल जाते हैं। नलिकाकार (tubular) फूल सफेद अथवा हल्की लालिमा लिए हुए 3-6 सेमी लम्बे और जोड़ों में होते हैं जो नीचे से खिलना प्रारम्भ करते हैं। इसके कलौंजी की तरह के बीज चपटे और काले रंग के होते हैं।

किस्में

रजनीगन्धा की किस्मों का वर्गीकरण स्पाइक की लम्बाई, फूलों की पंखुड़ियों की कतार और उनकी संख्या के आधार पर किया जाता है। किस्मों को मुख्यतः चार वर्गों में विभाजित किया गया है।

1. इकहरे पुष्प वाली (सिंगल टाइप) : इसके फूल में पुखुड़ियाँ एक कतार में होती हैं और पुष्प (florets) अपेक्षाकृत लम्बे होते हैं। फूल सफेद और तीव्र सुगन्धयुक्त होते हैं। खिले फूलों को पुष्प विन्यास में प्रयोग किया जाता है। इस किस्म में सगन्ध तेल की मात्रा अधिक होने के कारण कंक्रीट बनाने में

Downloaded from www.uphorticulture.gov.in
Internet Copy

प्रयोग की जाती है। इस वर्ग में कलकत्ता सिंगल और मैक्सिकन सिंगल किस्में आती हैं। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा विकसित अलंकारिक पत्तियों वाली किस्म रजतरेखा भी इसी वर्ग की है।

2. **दुहरे पुष्प वाली (डबल टाइप)** : इसमें पंखुड़ियों की तीन से अधिक कतारें होती हैं। इसके फूल हल्की लालिमा लिए हुए क्रीम से सफेद रंग के होते हैं। सुगन्ध कम होने के कारण कंक्रीट बनाने में उपयोगी नहीं है। पंखुड़ियाँ पूरी तरह से नहीं खुलती हैं। लम्बे समय तक टिकने के कारण इसके फूलों को प्रमुखतः कट फ्लावर के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस वर्ग में कलकत्ता डबल, पर्ल डबल और अलंकारिक पत्तियों वाली किस्म स्वर्णरेखा प्रमुख हैं।

3. **अर्धदुहरे पुष्प वाली (मध्यम प्रकार)** : इस वर्ग में सफेद रंग के फूलों वाली पंखुड़ियों की 2-3 कतार होती हैं। इस वर्ग की किस्में कट फ्लावर के रूप में तथा कंक्रीट बनाने में प्रयोग की जाती हैं। वैभव, श्रृंगार तथा सुवासिनी किस्में सिंगल और डबल टाइप के संकरण (cross) से तैयार की गई हैं।

4. **अलंकारिक पत्तियों वाली किस्में** : राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा गामा किरणों के प्रयोग से विकसित अलंकारिक पत्तियों (दो रंगी) वाली किस्म रजतरेखा तथा स्वर्णरेखा इस वर्ग की हैं। रजतरेखा में पत्तियों के मध्य में चमकीली सफेद धारी होती हैं और फूल सिंगल टाइप के होते हैं। स्वर्णरेखा में पत्तियों के किनारे हरे एवं सुनहरे रंग के होते हैं और फूल डबल टाइप के होते हैं।

उपयुक्त जलवायु एवं भूमि

रजनीगन्धा को लगभग सभी प्रकार की जलवायु में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है, तथापि 40 डिग्री से. अधिक तथा 20 डिग्री से. कम तापमान फूलों की गुणवता पर दुष्प्रभाव डालता है। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में इसकी खेती वर्ष पर्यन्त की जा सकती है। इसकी खेती समुचित जलनिकास वाली उर्वर, रोगमुक्त दोमट–बलुई दोमट भूमि, जिसकी पी.एच. 6.5-7.5 हो, में सफलतापूर्वक की जा सकती है। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के बंथरा अनुसंधान केन्द्र पर रजनीगन्धा को 9.0 पी.एच. वाली भूमि में भी उगाया गया है। इसकी खेती के लिए चुने गए खेत छायादार स्थानों से दूर होने चाहिए जहाँ सूर्य का प्रकाश प्रचुर मात्रा में, दीर्घकाल तक मिलता हो।

खेत की तैयारी

चुने गए खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से 6-8 इंच गहरी जुताई फरवरी माह में करनी चाहिए। इसके बाद दो–तीन जुताई हैरो/कल्टीवेटर अथवा देशी हल से करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें। खेत से घास–फूस को चुनकर निकाल दें। आखिरी जुताई से पहले खाद और उर्वरक की संस्तुत मात्रा खेत में डाल दें। यदि खेत में दीमक, निमेटोड, अन्य कीटों आदि के प्रकोप का भय हो तो फ्यूराडान या थिमेट का प्रयोग करें। तत्पश्चात पाटा लगाकर खेत को समतल कर लें। तैयार खेत में 10 मीटर लम्बी तथा 2 मीटर चौड़ी अथवा सुविधानुसार उपयुक्त आकार की क्यारियाँ तैयार कर लें।

खाद एवं उर्वरक

रजनीगन्धा की फसल को पोषक तत्वों को अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। कार्बनिक और रासायनिक खादों के संतुलित प्रयोग से इसका अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। खेत की अंतिम जुताई से पहले लगभग 30 टन प्रति हेक्टेयर अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद अथवा 15 टन गोबर की खाद व 3 टन नीम की खली डालनी चाहिए। नीम की खली पोषण के साथ मृदाजनित रोगों व कीटों के नियंत्रण

में भी प्रभावी होती है। नाइट्रोजन, फास्फोरस एक पोटाश रजनीगंधा की बढ़वार तथा उत्पादन को प्रभावित करते हैं। पोषक तत्वों की कमी से कभी–कभी फूल एकदम नहीं आते हैं। नाइट्रोजन की अधिक मात्रा प्रयोग करने से फूलों की गुणवत्ता तथा टिकने की क्षमता में कमी आती है। अतः मृदा परीक्षण के आधार पर, उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का प्रयोग किया जाना चाहिए। सामान्य उर्वर मृदा में 100 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश की प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई से पहले डालनी चाहिए। उर्वरकों की उपरोक्त मात्रा लगभग 100 किग्रा यूरिया, 300 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 75 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश से प्राप्त हो जायेगी। यूरिया और सिंगल सुपर फास्फेट के स्थान पर 130 किग्रा. डी.ए.पी. तथा 50 किग्रा यूरिया का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त 25 किग्रा जिंक सल्फेट डालने से लाभकारी परिणाम मिलते हैं। नाइट्रोजन की शेष मात्रा के लिए 100 किग्रा यूरिया दो बार में खड़ी फसल में रोपण के 40-50 तथा 70-75 दिनों बाद डालनी चाहिए। वानस्पतिक वृद्धि हो जाने के बाद पोषक तत्वों के पर्णीय छिड़काव के भी लाभकारी परिणाम देखे गए हैं।

कन्दों का चुनाव एवं रोपाई

रजनीगन्धा का प्रवर्धन बीज, कन्द व ऊतक संवर्धन द्वारा किया जा सकता है। लेकिन कंदों द्वारा प्रवर्धन सबसे सरल, प्रचलित एवं सस्ती विधि है। कंदों से तैयार किए गए पौधे बीज से तैयार पौधों की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं और अधिक उत्पादन देते हैं। रोपाई के लिए उचित कन्दों का चुनाव अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे अंकुरण एवं वृद्धि का समय, स्पाइक की लम्बाई, फूलों का आकार और संख्या प्रभावित होते हैं। रोपण के लिए 2 से 3 सेमी व्यास तथा लगभग 20-35 ग्राम वजन वाले स्पिन्डिल (तकली के आकार के) कंद उपयुक्त होते हैं। बड़े आकार के कन्दों में अंकुरण देरी से होता है लेकिन बढ़वार अच्छी होती है और फूल जल्दी आते हैं। ताजे खुदे कंदों को तुरन्त न रोपकर, लगभग एक माह भंडारण के उपरान्त रोपित करें। एक हेक्टेयर में रोपण हेतु लगभग एक लाख कन्दों की आवश्यकता होती है जो वजन में लगभग 15-20 क्विंटल होते हैं। उत्तर प्रदेश में रजनीगन्धा की रोपाई का उपयुक्त समय मार्च का दूसरा पखवाड़ा है, तथापि विशेष परिस्थितियों में इसे अप्रैल तक लगाया जा सकता है।

उचित आकार के कन्दों को अच्छी तरह साफ करके बैविस्टिन के 0.025% (25 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) घोल में 15 मिनट तक डुबाकर, छाया में सुखाना चाहिए। बैविस्टन की इस मात्रा को वर्मीवाश अथवा गोमूत्र के 10 प्रतिशत घोल में तैयार करके प्रयोग करने से अधिक लाभकारी परिणाम मिलते हैं। कन्दों को जैविक कवकनाशी ट्राइकोडर्मा के कल्चर से भी 10 ग्राम प्रति किग्रा कंद की दर से उपचारित किया जा सकता है। कन्दों की रोपाई कन्द के आकार, भूमि एवं रोपी जा रही किस्म पर निर्भर करती हैं। सिंगल टाइप की किस्मों को डबल की तुलना में अपेक्षाकृत कम दूरी पर लगाया जाता है। सामान्यतः कन्दों को 25 सेमी की दूरी पर, 40 सेमी दूर पंक्तियों में रोपा जाता है। इसके लिए 40 सेमी दूरी पर 7-8 सेमी गहरी लाइन खोदकर, कंदों को रखकर मिट्टी से अच्छी तरह ढक दें। दूसरी डिबलिंग विधि में उपरोक्त दूरी पर खुरपी से खोदकर, कंदों को लगाकर, मिट्टी से ढक दिया जाता है। सामान्यतः एक स्थान पर एक ही कंद लगाया जाता है। लेकिन छोटे कंद होने पर दो कंदों को एक साथ लगाया जाता है।

सिंचाई

अच्छे अंकुरण के लिए कंदों को समुचित नमी की आवश्यकता होती है, अतः रोपण के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। अंकुरण की अवस्था में अत्यधिक नमी अथवा जल भराव हानिकारक होता है। अंकुरण के बाद गरमी के महीनों में 5 से 7 दिन के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। ध्यान

रखें कि स्पाइक आने (पुष्पन) के समय खेत में नमी की अधिकता से फूल देरी से आते हैं, कम होते हैं और उनमें सुगन्ध भी कम होती है। बरसात के दिनों में सामान्यतः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है और जलनिकास पर ध्यान देना होता है। अक्टूबर–नवम्बर में 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई की जाती है। दिसम्बर–जनवरी में कंद सुप्तावस्था में होते हैं, अतः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि पेड़ी (रैटून) की फसल ली जा रही हो तो फरवरी माह से सिंचाई प्रारम्भ कर देनी होती है।

निराई–गुड़ाई

रोपाई के बाद की गई सिंचाई से होने वाले कंदों के अंकुरण के साथ–साथ अनेकों खर–पतवार तेजी से उगते हैं और पोषक तत्वों, नमी, सूर्य के प्रकाश तथा स्थान हेतु मुख्य फसल से प्रतियोगिता करते हैं। अतः रोपण के लगभग तीन सप्ताह बाद खुरपी से गहरी निराई–गुड़ाई की जानी चाहिए। इससे खर–पतवारों के नियंत्रण के साथ वायुसंचार भी अच्छा होता है और पौधे तेजी से वृद्धि करते हैं। पहली निराई–गुड़ाई के बाद गर्मियों के महीनों में एक माह के अंतराल पर, तथा जुलाई और सितम्बर में एक–एक निराई–गुड़ाई की आवश्यकता होती है। खर–पतवारों को निकालकर, कतारों के बीच के स्थान में बराबर फैला देने से ये पलचार (मल्च) का कार्य करते हैं और नमी को संरक्षित रखने के साथ मिट्टी में जीवांश की मात्रा भी बढ़ाते हैं। रासायनिक खरपतवारनाशी के प्रयोग की अपेक्षा खुरपी से की गई निराई–गुड़ाई के परिणाम अधिक लाभकारी पाए गए हैं।

फसल सुरक्षा

रजनीगन्धा एक सहनशील तथा कठोर फसल है और इसे विशेष देख–भाल की आवश्यकता नहीं होती है। खर–पतवारों से फसल की सुरक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण है जबकि कीटों और रोगों का विशेष प्रकोप नहीं देखा गया है। यह फसल जानवरों द्वारा चरी जाती है, अतः फूल आने के समय पालतू और नीलगाय जैसे जंगली जानवरों से फसल की सुरक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। रजनीगन्धा के खेत में चूहे बिल बनाकर फसल का नुकसान करते हैं। यह समस्या रैटून फसल में विकराल रूप धारण कर लेती है। इनके नियंत्रण के लिए जिंक फास्फाइड अथवा रोबन जैसे व्यावसायिक उत्पाद प्रयोग किए जा सकते हैं।

खेत में घास रहने पर फसल पर टिड्डों का प्रकोप होता है जो फूलों का नुकसान करते हैं। टिड्डों और माहू के नियंत्रण के लिए मैलाथियान अथवा रोगोर के 0.1% (1 मिली दवा प्रति लीटर पानी) घोल का छिड़काव कर सकते हैं। थ्रिप्स और लाल मकड़ी कीट बहुत छोटे आकार के होते हैं और पत्तियों की निचली सतह पर पाए जाते हैं। ये पत्तियों, तने और फूलों का रस चूसते हैं। थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु खेत की तैयारी के समय थिमेट का प्रयोग लाभकारी होता है। खड़ी फसल में इनके नियंत्रण हेतु 0.1% नुवाक्रान का प्रयोग किया जा सकता है। लाल मकड़ी कीट के नियंत्रण हेतु 0.2% मेटासिस्टाक्स अथवा घुलनशील सल्फर का प्रयोग करते हैं। खेत की तैयारी के समय यदि कीटों हेतु मादा का उपचार कर दिया गया हो तो थ्रिप्स, बीविल, दीमक, मकड़ी आदि का प्रकोप नहीं होता।

पौधों में सूत्रकृमि (निमेटोड) का प्रकोप होने से पौधे पीले पड़ जाते हैं, पत्तियाँ सूखने लगती हैं और पौधे की बढ़वार रुक जाती है। खेत की तैयारी के समय फ्यूराडान या थिमेट अथवा नीम की खली का प्रयोग करके फसल निमेटोड से बचाई जा सकती है। खड़ी फसल में इनका प्रकोप होने पर 5% नीम की खली का घोल प्रभावित पौधों की जड़ों के आस–पास डालना चाहिए।

फसल की रोगों से रक्षा हेतु खेत तथा कंदों का चुनाव करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। चयनित खेत कवकजनित रोगों से मुक्त होना चाहिए तथा कंद रोगमुक्त फसल से लिये जाने चाहिए। रोपण से पूर्ण कंदोपचार (बैविस्टिन का 0.025%घोल) कर देने से रोगों का प्रकोप कम होता है।

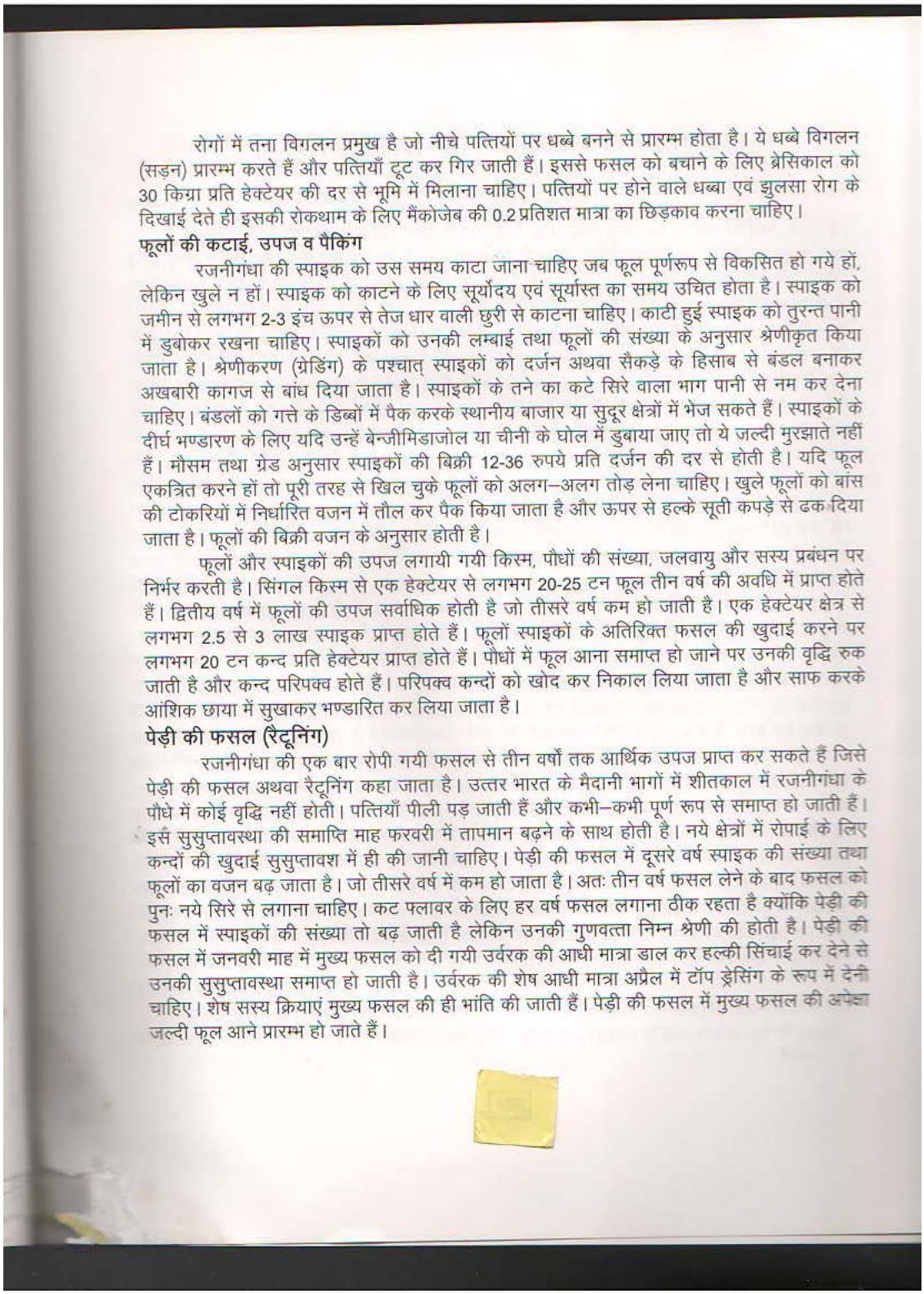

रोगों में तना विगलन प्रमुख है जो नीचे पत्तियों पर धब्बे बनने से प्रारम्भ होता है। ये धब्बे विगलन (सड़न) प्रारम्भ करते हैं और पत्तियाँ टूट कर गिर जाती हैं। इससे फसल को बचाने के लिए ब्रेसिकाल को 30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाना चाहिए। पत्तियों पर होने वाले धब्बा एवं झुलसा रोग के दिखाई देते ही इसकी रोकथाम के लिए मैंकोजेब की 0.2 प्रतिशत मात्रा का छिड़काव करना चाहिए।

फूलों की कटाई, उपज व पैकिंग

रजनीगंधा की स्पाइक को उस समय काटा जाना चाहिए जब फूल पूर्णरूप से विकसित हो गये हों, लेकिन खुले न हों। स्पाइक को काटने के लिए सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय उचित होता है। स्पाइक को जमीन से लगभग 2-3 इंच ऊपर से तेज धार वाली छुरी से काटना चाहिए। काटी हुई स्पाइक को तुरन्त पानी में डुबोकर रखना चाहिए। स्पाइकों को उनकी लम्बाई तथा फूलों की संख्या के अनुसार श्रेणीकृत किया जाता है। श्रेणीकरण (ग्रेडिंग) के पश्चात् स्पाइकों को दर्जन अथवा सैकड़े के हिसाब से बंडल बनाकर अखबारी कागज से बांध दिया जाता है। स्पाइकों के तने का कटे सिरे वाला भाग पानी से नम कर देना चाहिए। बंडलों को गत्ते के डिब्बों में पैक करके स्थानीय बाजार या सुदूर क्षेत्रों में भेज सकते हैं। स्पाइकों के दीर्घ भण्डारण के लिए यदि उन्हें बेन्जीमिडाजोल या चीनी के घोल में डुबाया जाए तो ये जल्दी मुरझाते नहीं हैं। मौसम तथा ग्रेड अनुसार स्पाइकों की बिक्री 12-36 रुपये प्रति दर्जन की दर से होती है। यदि फूल एकत्रित करने हों तो पूरी तरह से खिल चुके फूलों को अलग–अलग तोड़ लेना चाहिए। खुले फूलों को बांस की टोकरियों में निर्धारित वजन में तौल कर पैक किया जाता है और ऊपर से हल्के सूती कपड़े से ढक दिया जाता है। फूलों की बिक्री वजन के अनुसार होती है।

फूलों और स्पाइकों की उपज लगायी गयी किस्म, पौधों की संख्या, जलवायु और सस्य प्रबंधन पर निर्भर करती है। सिंगल किस्म से एक हेक्टेयर से लगभग 20-25 टन फूल तीन वर्ष की अवधि में प्राप्त होते हैं। द्वितीय वर्ष में फूलों की उपज सर्वाधिक होती है जो तीसरे वर्ष कम हो जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र से लगभग 2.5 से 3 लाख स्पाइक प्राप्त होते हैं। फूलों स्पाइकों के अतिरिक्त फसल की खुदाई करने पर लगभग 20 टन कन्द प्रति हेक्टेयर प्राप्त होते हैं। पौधों में फूल आना समाप्त हो जाने पर उनकी वृद्धि रुक जाती है और कन्द परिपक्व होते हैं। परिपक्व कन्दों को खोद कर निकाल लिया जाता है और साफ करके आंशिक छाया में सुखाकर भण्डारित कर लिया जाता है।

पेड़ी की फसल (रैटूनिंग)

रजनीगंधा की एक बार रोपी गयी फसल से तीन वर्षों तक आर्थिक उपज प्राप्त कर सकते हैं जिसे पेड़ी की फसल अथवा रैटूनिंग कहा जाता है। उत्तर भारत के मैदानी भागों में शीतकाल में रजनीगंधा के पौधे में कोई वृद्धि नहीं होती। पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और कभी–कभी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती हैं। इसे सुसुप्तावस्था की समाप्ति माह फरवरी में तापमान बढ़ने के साथ होती है। नये क्षेत्रों में रोपाई के लिए कन्दों की खुदाई सुसुप्तावश में ही की जानी चाहिए। पेड़ी की फसल में दूसरे वर्ष स्पाइक की संख्या तथा फूलों का वजन बढ़ जाता है। जो तीसरे वर्ष में कम हो जाता है। अतः तीन वर्ष फसल लेने के बाद फसल को पुनः नये सिरे से लगाना चाहिए। कट फ्लावर के लिए हर वर्ष फसल लगाना ठीक रहता है क्योंकि पेड़ी की फसल में स्पाइकों की संख्या तो बढ़ जाती है लेकिन उनकी गुणवत्ता निम्न श्रेणी की होती है। पेड़ी की फसल में जनवरी माह में मुख्य फसल को दी गयी उर्वरक की आधी मात्रा डाल कर हल्की सिंचाई कर देने से उनकी सुसुप्तावस्था समाप्त हो जाती है। उर्वरक की शेष आधी मात्रा अप्रैल में टॉप ड्रेसिंग के रूप में देनी चाहिए। शेष सस्य क्रियाएं मुख्य फसल की ही भांति की जाती हैं। पेड़ी की फसल में मुख्य फसल की अपेक्षा जल्दी फूल आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

Downloaded from www.uphorticulture.gov.in
Internet Copy